SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) :2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal) Volume 3, Issue-5,Oct-Nov-Dec: 2025
Published by Rangmati Publication https://www.rangmatipublication.com

भारतीय ज्ञान परंपरा की पुनर्स्थापना हेतु भाषा के रूप में हिंदी का योगदान

डॉ० राम भरोसे

शोध सारांश -

भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्ध विरासत कई हजार वर्षों से भारत की सांस्कृतिक एकता और अखंडता, विश्वास,धार्मिक,सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों,रीति-रिवाजों तथा पारंपरिक ज्ञान की विभिन्न प्रणालियों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करने का पुनीत कर्म लगातार कर रही हैं।प्राचीन काल से ही भारत की ज्ञान परंपरा में भाषा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि रहा है। यदि हम हिंदी भाषा के उद्भव की बात करें तो यह वैदिक संस्कृत की वाचिक परंपरा से जुड़ा हैं जहां हमारे प्राचीन धर्म ग्रंथों जैसे वेदों,उपनिषदों, शास्त्रीय ग्रंथों,पांडुलिपियों आदि को मौखिक रूप से संरक्षित किया गया। गुरु शिष्य परंपरा पर आधारित भारत की इस प्राचीन शिक्षा पद्धति में मौखिक ज्ञान के गतिमान होने से समाज में न केवल ज्ञान की ज्योत प्रज्जवलित हुई अपितु जीवन निर्वाह करने हेतु आवश्यक व्यवहारिक शिक्षा का भी प्रसार हुआ। समय,काल और परिस्थितियों के परिवर्तन के बीच भारतीय ज्ञान को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए जब सरल भाषा के प्रयोग की आवश्यकता प्रतीत होने लगी तब ऐसी स्थिति में समाज में ज्ञान के प्रसार हेतु संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत,पाली और अर्धमागधी जैसी भाषाओं का प्रयोग किया जाने लगा। इन भाषाओं की सहायता से एक ओर जहां समाज में सत्य और अहिंसा की स्थापना करने वाले महान बौद्ध और जैन धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ वहीं दूसरी ओर अपभ्रंश भाषाओं का विकास भी हुआ जो हिंदी भाषा के प्रारंभिक स्वरूप का आधार बनकर वाचिक परंपरा के माध्यम से भक्ति,ज्ञान और दर्शन की त्रिवेणी से जनता को सराबोर करने का सशक्त माध्यम बनी।

वाचिक परंपरा के पश्चात हिंदी भाषा का लिखित विकास 10 वीं से 12वीं शताब्दी के अपभ्रंश साहित्य से हुआ। हिंदी खड़ी बोली के जनक एवं हिंदी साहित्य के शुरुआती लेखक के रूप में विख्यात प्रसिद्ध शायर,कवि एवं संगीतकार अमीर खुसरो ने हिंदवी में अनेक रचनाएं कर हिंदी भाषा के लिखित रूप को प्रारंभिक पहचान दी। तत्पश्चात 14 वीं से 17 वीं सदी में महान कवि तुलसीदास,सूरदास एवं कबीरदास जी ने ब्रज,अवधी एवं खड़ी बोली में अपनी अनेक काव्य रचनाओं के माध्यम से हिंदी भाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार में अपना अतुलनीय योगदान दिया। रीतिकाल में हिंदी साहित्य के अंतर्गत अनेक रचनाओं में श्रृंगार रस प्रमुखता से विद्यमान रहा वहीं आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र,मुंशी प्रेमचन्द और महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे महान साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से हिंदी भाषा को जनजागृति, जन सुधार एवं जन चेतना,यथार्थवाद, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम बनाया। स्वतंत्रता संग्राम के कठिन दौर में हिंदी भाषा की अलख ने जनता में प्राण वायु फूंकने का कार्य करते हुए जनजागरण किया। वर्तमान में हिंदी न केवल हमारी संप्रेषण की भाषा है अपितु शिक्षा,विज्ञान,साहित्य तकनीक और मीडिया जैसे क्षेत्रों की सशक्त भाषा के रूप में भी अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं।

बीज शब्द -

आधुनिक काल,सांस्कृतिक विरासत, पौराणिक भाषा,संस्कृत भाषा, शिक्षा, तकनीक, खड़ी बोली, साहित्य।

प्रस्तावना -

भारत एक संस्कृति प्रधान देश हैं तथा भारतीय पारंपरिक ज्ञान देश की सांस्कृतिक पहचान हैं। हमारे देश में चिरकाल से ही भारतीय ज्ञान परंपरा का यह विशिष्ट आधार रहा हैं कि संपूर्ण संसार में श्रेष्ठ,बोधगम्य,सुसभ्य सुसंस्कृत

डॉ० राम भरोसे, (एम.ए. हिन्दी, बीएड., PGDCA, यू.जी.सी. नेट, पीएचडी, एम.ए. संस्कृत, CAFN, एम.ए. पत्रकारिता एवं जनसंचार), एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग प्रभारी एवं शोध निर्देशक), राजकीय महाविद्यालय मंगलौर, हरिद्वार-247656

एवं सात्विक विचारों व मानवीय आदर्शों का सर्वत्र संचार हो। अनुपम और अद्वितीय ज्ञान का पर्याय,प्रज्ञा का पुंज हमारी इस भारतीय ज्ञान परंपरा में वेद,पुराण,मनुस्मृति, उपनिषद,श्रुति,रामायण,महाभारत तथा भारतीय वाङ्मय जैसे अनेक प्रेरक ग्रंथों तथा लोक साहित्य में निहित ज्ञान का समावेश रहा हैं जिसने मनुष्य को एक उत्कृष्ट,अर्थपूर्ण, विवेकपूर्ण और आनंदमय जीवन जीने की कला सिखाने का उपक्रम किया हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल जीव,जगत और प्रकृति का दर्शन कराती हैं अपितु ज्ञान-विज्ञान,धर्म-कर्म,भोग-त्याग, लौकिक-पारलौकिक जैसे गूढ विषयों का व्यवहारिक पक्ष भी बताती हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति को भली भांति जानने और समझने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा को समझ कर उसका अनुकरण करना अत्यन्त आवश्यक हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा लोक संस्कृति रूप पर आधारित हैं जिसके अंतर्गत शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा को समान रूप से महत्व प्रदान किया गया हैं । भारत की ज्ञान परंपरा ईश्वर केंद्रित न होकर मानव केंद्रित रही हैं जिससे मनुष्य ने अपने जीवन में सफलता के नित नवीन आयामों को सरलता से तय किया हैं। सर्वाधिक प्राचीन और व्यापक रही इस ज्ञान परंपरा ने कला,विज्ञान, दर्शन,अध्यात्म,साहित्य,गणित,भूगोल आयुर्वेद,ज्योतिष,योग विद्या,कला शास्त्र,अर्थशास्त्र,खगोलशास्त्र एवं चिकित्सा के क्षेत्रों में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं जिसके परिणामस्वरुप यह केवल दार्शनिक और आध्यात्मिक होने के साथ-साथ सामाजिक,व्यवहारिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी समृद्ध रही हैं। ज्ञान के इस विशाल कोष को बिना भाषा के समझना असंभव था। यद्यपि प्राचीन भारत में संस्कृत ज्ञान की भाषा रही हैं परंतु कालांतर में प्राकृत,पाली अपभ्रंश और तत्पश्चात हिंदी सहित अनेक भारतीय भाषाओं के अंतर्गत ज्ञान परंपरा का विस्तार हुआ। अनेक महान संतों,साहित्यकारों,कवियों और आचार्यों ने इस ज्ञान को आम जनता तक पहुंचाने के लिए हिंदी भाषा को माध्यम बनाकर अनेक सामाजिक संदेश दिए। भारतीय ज्ञान परंपरा की सबसे प्रमुख विशेषता यह हैं कि यह पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रहकर व्यावहारिक और सामाजिक संरचना की प्रमुख आधार बनकर मनुष्य का सर्वांगीण विकास करने में सहायक सिद्ध हुई हैं। हिंदी भाषा का उद्भव और विकास भी इसी भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ा हैं।

हिंदी भाषा और भारत की ज्ञान परंपरा रुपी दो मजबूत स्तंभ हमारे देश की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर हैं। भारत एक ऐसी सभ्यता वाला देश हैं जहां भाषा केवल विचारों की अभिव्यक्ति और संप्रेषण का माध्यम ही नहीं अपितु परंपरा और ज्ञान की संवाहिका तथा संस्कृति का पोषण करने वाली रही हैं। भारतीय समाज को दिशा और दृष्टि प्रदान करने, बौद्धिक व सांस्कृतिक संरचना का निर्माण करने तथा समाज में सामूहिक चेतना उत्पन्न करने में हिंदी भाषा और भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्वपूर्ण योगदान हैं।

हिंदी भाषा का उद्भव -

हिंदी' शब्द वस्तुतः फारसी भाषा से निर्मित शब्द हैं जिसका अर्थ हैं- हिंदी का या हिंदी से संबंधित। हिंदी शब्द का उद्भव सिंधु शब्द से हुआ हैं। सिंधु का तात्पर्य सिंधु नदी से है। जब ईरानी लोगों का उत्तर पश्चिम से होते हुए भारत आगमन हुआ तब उन्होंने सिंधु नदी के आसपास जीवनयापन कर रहे लोगों को हिंदू कह कर संबोधित किया।ईरानी भाषा में 'स' को 'ह' तथा 'ध' को 'द' उच्चारित किया जाता था ।इस, प्रकार सिंधु से हिंदू शब्द बना तथा 'हिंदू' से 'हिंद', फिर कालांतर में 'हिन्द' से 'हिंदी 'बना जिसका अर्थ होता है ' हिंद का ' - हिंद देश के निवासी। बाद में यह शब्द ' हिंदी की भाषा 'के अर्थ में उपयोग होने लगा।

आज हम जिस भाषा को हिंदी के रूप में जानते है,वह आधुनिक आर्य भाषाओं में से एक है । भारत में उसका प्राचीनतम रूप संस्कृत हैं।संस्कृत का काल मुख्य रूप से १५००ई.पू.से ५००ई.पू.तक माना जाता हैं। इस काल में संस्कृत वैचारिक अभिव्यक्ति अर्थात् संप्रेषण की भाषा थी। संस्कृत काल के भी दो रूप मिलते हैं।एक भाषा वैदिक संस्कृत है,जिसमें वैदिक संहिताओं, ब्राह्मणों ,आरण्यकों तथा प्राचीन उपनिषदों का सृजन हुआ हैं तथा दूसरी लौकिक संस्कृत हैं जिसका मूल आधार वैदिक संस्कृत का उत्तरी रूप ही है।

हिंदी भाषा का विकास -

हिंदी भाषा के मुख्यतः दो रूप हैं - पश्चिमी हिंदी तथा पूर्वी हिंदी । पूर्वी हिंदी का संबंध अर्द्धमागधी से हैं तथा पश्चिम हिंदी का संबंध शौरसेनी अपभ्रंश से। हिंदी के इन दोनों रूपों में पश्चिमी हिंदी का महत्व अधिक इसलिए रहा हैं क्योंकि यह साहित्यिक और सामाजिक दोनों ही दृष्टि से प्रमुख रही है। इसके महत्व का कारण इसकी मध्यदेशीय परंपरा है,क्योंकि मध्यदेशीय संस्कृत ,पाली,शौरसेनी, प्राकृत तथा अपभ्रंश के बाद पश्चिमी हिंदी का महत्व प्राप्त करना स्वाभाविक है। कहने का आशय यह हैं कि पूर्वी हिंदी में अवधी भाषा का महत्व अधिक हैं और पश्चिमी हिंदी में ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली का साहित्यिक महत्व है।

आधुनिक हिंदी का विकास मुख्य रूप से 19वीं सदी से माना जाता है, जिसमें खड़ी बोली का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। हिंदी के विकास को तीन भागों में बांटा जा सकता है-

(१) प्राचीन या आदिकाल (१००० से १५०० ई. तक) -
इस कलावधि में 'डिंगल' और 'पिंगल' जैसी हिंदी की विभिन्न बोलियाँ विकसित हुईं तथा प्राकृत बोलियाँ जैसे ब्रज,अवधी और खड़ी बोली का भी उदय हुआ।

(२) मध्यकाल (१५०० से १८०० ई. तक)-
इस काल में ब्रजभाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में बाहुल्य रहा क्योंकि अनेक काव्य रचनाएं ब्रज और अवधी भाषा में की गयी।

(३) आधुनिक काल (१८०० ई. से अब तक)-
19वीं सदी से अब तक,खड़ी बोली का गद्य के रूप में विकास हुआ तथा निबंध,कहानी,उपन्यास,नाटक आदि विधाओं का विकास हुआ। यह वही दौर था जब अनेक खूनी संघर्षों के पश्चात सन् 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा। आज देश की अधिकांश जन आबादी हिंदी भाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान प्रदान करती हैं।

हिंदी भाषा का प्रभाव -

संपूर्ण विश्व में हिंदी भाषा का व्यापक प्रभाव हैं। भारत की प्रमुख भाषा के रूप में हिंदी न केवल संचार का एक सशक्त माध्यम हैं अपितु देश की एकता और संस्कृति का प्रतीक भी हैं। भाषाई माध्यम के अलावा हिंदी का सांस्कृतिक,सामाजिक,आर्थिक, शैक्षणिक व राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्व हैं जिन्हें निम्नानुसार स्पष्ट किया जा सकता हैं -

१) सामाजिक प्रभाव -

किसी भी देश के नागरिकों के बीच सुखद और मधुर सामाजिक संबंध स्थापित करने में हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। संपूर्ण संसार में हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा हैं जो विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों को एक एक दूसरे के निकट लाती हैं। हिंदी न केवल संपर्क और संप्रेषण की भाषा के रूप में कार्य करती हैं अपितु समाज और राष्ट्र पर गहरा, बहुआयामी और व्यापक प्रभाव भी डालती हैं। भारत जैसे संस्कृति प्रधान देश में हिंदी भाषा सांस्कृतिक विरासत की वाहक बनकर लोगों को कला, दर्शन,साहित्य,संगीत व संस्कृति से जोड़कर अपने अस्तित्व व वर्चस्व को बनाए रखने में सहायता करती हैं। समाज में रहने वाले नागरिकों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने,समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने,भारतीय ज्ञान की विभिन्न परंपराओं व संस्कृति का प्रसार करने तथा राष्ट्र की एकता और अखंडता को मजबूत बनाए रखने में हिंदी भाषा के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। हमारे देश में संवाद स्थापित करने के साथ-साथ हिंदी भाषा का प्रयोग सांस्कृतिक एकीकरण को बढ़ावा देकर सामाजिक न्याय और समानता के मुद्दों पर अपना स्वर बुलंद करने तथा समाज के हितों को ध्यान में रखते हुए संचालित किए जाने वाले विभिन्न सामाजिक

आंदोलनों एवं अभियानों को गति देने में भी किया जाता हैं।हिंदी भाषा अपने विशाल साहित्य और सांस्कृतिक संदर्भों के माध्यम से रूढ़िवादी सोच को चुनौती देने और सामाजिक दृष्टिकोण को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

भारतीय संस्कृति और दर्शन को समृद्ध बनाने वाले महान शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था -"यदि माता शिक्षित होगी तो बच्चे शिक्षित होंगे और समाज शिक्षित होगा। इसके साथ-साथ समाज के सभी रूढ़िवादी मापदंड बदल जाएंगे।"१

२) सांस्कृतिक प्रभाव -

हिंदी भाषा का भारतीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव हैं। यह न केवल हमारे देश की एक प्रमुख भाषा के रूप में अस्तित्व में है,अपितु यह भारतीय संस्कृति,साहित्य और कला का एक महत्वपूर्ण अंग भी है। हिंदी के माध्यम से भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत जैसे लोककथाएँ,लोकगीत, लोक साहित्य,सिनेमा तथा संगीत आदि को संरक्षित और साझा किया जाता हैं।"भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति रही हैं। जब विश्व की संस्कृति घुटने टेक रही थी तब हमारी संस्कृति युवा और पुष्ट हो चुकी थी।"२ हमारी संस्कृति के अस्तित्व में रहने और उन्नत होने का संपूर्ण श्रेय हिंदी भाषा को ही जाता हैं क्योंकि हिंदी भाषा का सांस्कृतिक प्रभाव कई रूपों में दिखाई देता हैं। हिंदी साहित्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का पर्याय हैं जिसके अंतर्गत साहित्य की अनेक विधाएं जैसे महाकाव्य, नाटक,उपन्यास,कहानी,एकांकी, कविताएं तथा अन्य साहित्यिक रूपों का समावेश किया गया हैं।

३) वैश्विक प्रभाव -

हिंदी भाषा का व्यापक प्रभाव न केवल भारत देश में है अपितु विश्व के अनेक देशों में है जहां हिंदी बोलने, सुनने,लिखने और समझने वाले बड़ी तादाद में हैं। विभिन्न समुदायों को एक मंच पर लाने तथा सामाजिक संबंधों के बीच परस्पर सौहार्द और दृढ़ता स्थापित करने में हिंदी भाषा का अतुलनीय योगदान हैं।

४) राजनीतिक प्रभाव -

संसार का यह शाश्वत और अटल सत्य हैं कि वर्चस्ववादी शक्तियों ने किसी देश की सभ्यता और संस्कृति को नष्ट करने के लिए सदैव भाषा को ही अपना लक्ष्य बनाया हैं। हिंदी भाषा ने भी अनेक उपनिवेशवादी शक्तियों का सामना करते हुए अपनी गरिमा और अस्तित्व को न केवल बचा कर रखा हैं अपितु अनेक पहलुओं में अपार लोकप्रियता और विस्तार को प्राप्त किया हैं। राजनीतिक स्तर पर भी हिंदी के व्यापक प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि हिंदी भाषा की देश के राजनीतिक विकास में भी सर्वोच्च भूमिका रही है। हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा हैं जिसके माध्यम से संपूर्ण भारत में संपर्क स्थापित किया जा सकता है तथा भारत को एकता के सूत्र में बांधकर राजनीतिक रूप से सशक्त व समृद्ध बनाया जा सकता है। देश के पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने हिंदी भाषा की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए एक सम्मेलन में कहा था -"देशभर को बाधंने के लिए भारत के विभिन्न हिस्से एक दूसरे से संबंधित रहें,इसके लिए हिंदी की जरूरत है।"३ देश की राज्य सरकार व केंद्र सरकार सरकारी कामकाज को संपादित करने के लिए राजभाषा हिंदी का ही प्रयोग करते हैं साथ ही देश के अनेक राजनेता जनता से जुडने के लिए और उन्हें अनेक योजनाओं की जानकारी देने तथा प्रभावित करने के उद्देश्य से संवाद के लिए हिंदी भाषा का ही प्रयोग करते हैं।

५) आर्थिक प्रभाव -

भारत के अधिकांश क्षेत्रों में हिंदी भाषा का आर्थिक प्रभाव अत्यधिक गहरा हैं। भारत की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग हिंदी भाषी क्षेत्र है।हिंदी भाषी क्षेत्रों में विशाल उपभोक्ता बाजार की उपलब्धता,हिंदी भाषा में मीडिया और मनोरंजन के विभिन्न आयामों की बढ़ती लोकप्रियता तथा सरकारी कामकाज में हिंदी का राजभाषा के रूप में प्रयोग,ये सभी कारक हिंदी भाषा के आर्थिक प्रभाव को स्पष्ट करते हैं।

कहने का आशय यह हैं कि किसी भी देश की भाषा वहां के आर्थिक, सामाजिक,सांस्कृतिक,वैश्विक और राजनीतिक स्तर को बहुत हद तक प्रभावित करती हैं। यह हमारे देश का सौभाग्य हैं कि आज भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में हिंदी भाषा को लोकप्रिय तथा रोचक भाषा के रूप में अपनाया जा रहा हैं। इस संदर्भ में डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया कहते हैं -" हिंदी हमारी राष्ट्रीयता की भाषा है। यह हमारी राजभाषा तो है ही हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक विरासत की वाहिका भी हैं।४ भारतीय ज्ञान परंपरा के अभिन्न हिस्से के रूप में हिंदी अलग-अलग संस्कृतियों को आपस में जोड़कर सामाजिक संबंधों को मजबूती प्रदान करती हैं।

प्रसिद्ध विद्वान कन्हैया लाल मानिक लाल मुंशी जी हिंदी की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहते हैं -"हिंदी हमारे राष्ट्रीय एकीकरण का शक्तिशाली और प्रधान माध्यम है।"५

भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान में हिंदी भाषा का योगदान -

हिंदी भाषा,भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह ज्ञान को व्यापक रूप से प्रसारित करने,सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित व संवर्धित करने,एकता और अखंडता की भावना का सूत्रपात करने और आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता स्थापित करने में सहायक हैं। इसलिए, हिंदी भाषा को बढ़ावा देना और उसे सशक्त बनाना, भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने और भारत को विश्व गुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण तथा सराहनीय कदम हैं। हिंदी भाषा के योगदान को निम्न बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता हैं -

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान -

हमारे देश का यह सबसे बड़ा दुर्भाग्य रहा कि लगभग 200 वर्षों तक अंग्रेजो ने भारत पर हुकूमत की। भारत के अस्तित्व को मिटाने की ब्रिटिश सरकार ने पुरज़ोर कोशिश की परंतु तमाम विरोध-प्रतिरोध के पश्चात वर्तमान में भारत पूरी दुनिया के सामने महाशक्ति के रूप में उभरा हैं। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को आधिकारिक भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान की गयी हैं जिसमें हिंदी एक हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हिंदी भाषा को मातृभाषा मानने वाली आबादी लगभग 44 प्रतिशत है। भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी भाषा का विशेष योगदान हैं क्योंकि इससे न केवल हिंदी माध्यम में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों का बौद्धिक विकास,सांस्कृतिक समझ तथा संरचना कौशल विकसित होता हैं अपितु विद्यार्थियों को अपनी विचारधारा और विचारों को स्पष्ट रूप से समाज के समक्ष रखने की क्षमता भी विकसित होती हैं।यही कारण हैं कि नवीन शिक्षा नीति 2000 ने भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा प्रणाली में शामिल करने पर बल दिया हैं साथ ही स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के हिंदी विषय के पाठ्यक्रम में इसे शामिल भी किया हैं। हिंदी भाषा भारतीय समाज की सामाजिक तथा सांस्कृतिक धाराओं के आधार पर देश में व्याप्त राष्ट्रीय एकता को भी दर्शाती हैं। राष्ट्रीय एकता के संबंध में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था- "राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी इसमें दो राय नहीं।"६

तकनीकी क्षेत्र में योगदान -

आधुनिक युग सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीक का युग हैं।हिंदी भाषा ने विशेष रूप से तकनीकी शिक्षा सॉफ्टवेयर विकास और डिजिटल दुनिया में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। वर्तमान में कई ऐसे सॉफ्टवेयर और एप्लीकेशंस बाजार में उपलब्ध हैं जो हिंदी में होने के कारण भारतीय उपभोक्ताओं के लिए अधिक सरल,सुलभ और और सुविधाजनक है। डिजिटल दुनिया में हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ने से एक ओर जहां अनेक वेबसाइट्स,ब्लाग्स और शैक्षणिक सामग्री हिंदी में उपलब्ध हो रही हैं वही सोशल मीडिया के विभिन्न आयामों जैसे फेसबुक,व्हाट्सएप,ट्विटर, इंस्टाग्राम,गूगल,लिंक्डइन आदि की उपलब्धता ने उपभोक्ताओं की जीवनचर्या को अत्यधिक सुविधाजनक बना दिया है। एआइ तकनीक में भी हिंदी भाषा का उपयोग लगातार बढ़ता जा रहा हैं। कुल मिलाकर हिंदी भाषा से केवल हिंदी बोलने वाले उपयोगकर्ता ही नहीं बल्कि समग्र तकनीकी विकास भी लाभान्वित हुआ हैं।

साहित्य के क्षेत्र में योगदान -

हिंदी साहित्य के अंतर्गत विशेष रूप से भक्ति साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा में समाहित भारतीय ज्ञान को आम जनता तक पहुंचाने का उपक्रम किया है। तुलसी,कबीर,मीराबाई रहीम तथा सूरदास जैसे महान संतों में अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज को ज्ञान और भक्ति की सरिता में डुबकी लगाने का पुनीत अवसर प्रदान कर सामाजिक सुधार का संदेश दिया हैं। हिंदी साहित्य ने भारतीय मूल्यों,परंपराओं और संस्कृति को संरक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं।

कला व संस्कृति के क्षेत्र में योगदान -

हिंदी भाषा के अंतर्गत संगीत,नृत्य, साहित्य तथा अन्य कला रूपों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को बढ़ावा दिया जा सकता हैं।

चिकित्सा के क्षेत्र में योगदान -

भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत प्राचीन चिकित्सा परंपरा प्रणालियों जैसे आयुर्वेद,यूनानी व चीनी चिकित्सा में मनुष्य के स्वास्थ्य को एक समग्र दृष्टिकोण से देखा जाता है,जिसमें शरीर,मन और आत्मा शामिल हैं। यह हमें विभिन्न रोगों के कारणों और उपचार के तरीकों के विषय में गहरी समझ प्रदान करता है। इस प्राचीन भारतीय चिकित्सा ज्ञान को हिंदी में प्रसारित करके अधिक से अधिक लोगों को इसके माध्यम से लाभान्वित किया जा सकता हैं।

निष्कर्ष -

अंततोगत्वा यह कहा जा सकता हैं कि भारतीय पारंपरिक ज्ञान देश के सांस्कृतिक परिचय का मुख्य आधार है क्योंकि इसमें आध्यात्मिक साधनाए,कला और विज्ञान,साहित्य, प्रकृति,स्वास्थ्य,व्याकरण,संगीत आदि से संबंधित सभी विषयों की गहन समझ का समावेश है। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित यह ज्ञान न केवल भारत अपितु संपूर्ण विश्व के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिए इसका संरक्षण आवश्यक रूप से किया जाना चाहिए।भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान में हिंदी भाषा एक महत्वपूर्ण कारक इस दृष्टि से भी हैं कि इसकी सहायता से ज्ञान को जनसाधारण तक पहुंचाने,शिक्षा प्रणाली को सरल व रोचक बनाने, सांस्कृतिक पुनर्जागरण को बढ़ावा देने तथा भारतीय ज्ञान को वैश्विक स्तर पर प्रसारित करने का लक्ष्य सरलता से पूर्ण हो सकता हैं। सहस्त्राब्दियों से चली आ रही भारतीय ज्ञान परंपरा ऐसी बौद्धिक,सांस्कृतिक व दार्शनिक प्रक्रिया हैं जिसके मूल में लोक और शास्त्र का अद्भुत समन्वय रहा हैं।यह परंपरा ज्ञान अर्जन करने की साधना मात्र नहीं जीवन के समग्र अनुशीलन की ऐसी प्रक्रिया हैं जिसे अनेक मनीषियों,संतों,गुरुओं,आचार्यों व तत्ववेत्ताओं ने अपने विशिष्ट योगदान से पुष्पित,पल्लवित और समृद्ध किया हैं। कहने का अभिप्राय यह हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान का समावेश भी हैं और समाज केंद्रित विचारधारा भी,जो विश्व के लिए सबसे बड़े आकर्षण का केंद्र हैं। कृत्रिम मेधा जैसी आधुनिक सूचना तथा ज्ञान एवं अनुसंधान तकनीक का हिंदी भाषा में प्रयोग कर भारतीय ज्ञान और उसकी अन्य पारंपरिक प्रणालियों को विश्व की बहुत बड़ी आबादी तक सरलता से पहुंचा जा सकता हैं। अतः भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान में भाषा के रूप में हिंदी का योगदान सर्वोपरि,सर्वोच्च व अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।